Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

UG - Sem - IV - MJC - 07

Basic Concepts of Philosophy

M	T	W	T	F	S	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

FEBRUARY

MONDAY 27
JANUARY | 2025
027-338

"Relation of Philosophy with Religion"
(दर्शन और धर्म का सम्बन्ध)

'धर्म' और 'दर्शन' के बीच कुछ विषयों में समानता है, तो कुछ विषयों में विभिन्नता भी है।

'दर्शन' शब्द की उत्पत्ति दृश् धातु से हुयी है, जिसका अर्थ है- 'जिसके द्वारा देखा जाय'। पाश्चात्य दर्शन के अनुसार 'दर्शन मनुष्य का एक निष्पक्ष बौद्धिक प्रयत्न है जिसके द्वारा वह विश्व को उसकी सम्पूर्णता में समझने की चेष्टा करता है।

"Philosophy may be defined as that science which makes a systematic study of the universe as a whole."

भारतीय दर्शन के अनुसार — "परमतत्व" का साक्षात्कार हम अन्तः अनुभूतिवाद के द्वारा करते हैं।

'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है— "धारण करना, बनाये रखना अथवा पुष्ट करना।" इसका तात्पर्य यह है कि जो तत्व सम्पूर्ण संसार को, जीवन को धारण करता है, जिसके बिना संसार में व्यक्ति की स्थिति सम्भव नहीं, तथा जिससे सभी कुछ संयमित और सुव्यवस्थित

बना रहे, वही धर्म है। धर्म के सम्बन्ध में G. Gallaway ने कहा है कि-
"Religion is a man's faith in a power beyond himself whereby he seeks to satisfy his emotional needs and gain stability of life and which he expresses in acts of worship and service."

धर्म की उत्पत्ति मनुष्य के अन्दर सतत विद्यमान उस आध्यात्मिक भूख से होती है जो उसे उसकी अपूर्णता को दूर कर पूर्णता प्राप्ति के लिए प्रेरित करती रहती है। हर मानव का लक्ष्य रहता है एक असीम सत्ता के पास पहुँचना। इसलिए वह एक सर्वोसत्ता में विश्वास करने लगता है जो असीम, एवं आध्यात्मिक हो। इन्हीं मूल्यों की प्राप्ति धर्म का उद्देश्य है और धार्मिक भूख तभी मिटती है जब धर्म का उद्देश्य पूरा हो जाता है।

धार्मिक व्यक्ति के लिए आध्यात्मिक मूल्य चरम-सत्य है। धार्मिक भावना के लिए ईश्वर को मानना अनिवार्य नहीं है। बौद्ध आदि धर्म

ईश्वर को नहीं मानते हैं, फिर भी वे धर्म कहे जाते हैं, किन्तु सभी धर्म चाहे ईश्वर को माने या नहीं माने, आध्यात्मिक मूल्यों को अवश्य मानते हैं। आध्यात्मिक मूल्यों को ही विश्व का आधार माना जाता है और इसी के आधार पर पूरे विश्व की व्याख्या होती है।

दर्शन और धर्म का प्राकृतिक सम्बन्ध ही उचित है। 'दर्शन' धर्म से स्वतंत्र है और धर्म-दर्शन के आलोच्य विषयों में से एक है। जब कभी इस सम्बन्ध को तोड़कर धर्म दर्शन का शासक बन जाता है तो दोनों की प्रगति रुक जाती है।

धर्म और दर्शन के आपसी सम्बन्ध को लेकर पाश्चात्य और भारतीय दार्शनिकों में मतभेद है।

पाश्चात्य दार्शनिकों के अनुसार दोनों में एकता केवल विषय को लेकर है क्योंकि दोनों का विषय सम्पूर्ण विश्व है। किन्तु उत्पत्ति, उद्देश्य और प्रकृति के विषय में दोनों एक नहीं हैं। दर्शन की उत्पत्ति जिज्ञासा से, बुद्धि की माँग से होती है जबकि धर्म की उत्पत्ति आध्यात्मिक भूख से होती है। दर्शन का उद्देश्य

है विश्व की निष्पक्ष व्याख्या किन्तु धर्म का उद्देश्य है, आध्यात्मिक मूल्यों की वास्तविक सिद्धि। दर्शन का उद्देश्य सैद्धान्तिक है, धर्म का व्यवहारिक। धर्म की पद्धति विश्वास और अपरोक्ष अनुभूति से बनी है, जबकि दर्शन की पद्धति बौद्धिक चिन्तन से।

भारतीय दर्शन के अनुसार पाश्चात्य मत की अपेक्षा धर्म और दर्शन के बीच अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनुष्य की आध्यात्मिक जीवन-चर्या के दोनों ही परस्पर सहायक और समानतः आवश्यक अंग है। धर्म के बिना दर्शन निष्फल है और दर्शन के बिना धर्म असमर्थ। धर्म का उद्देश्य है पूर्णत्व या मोक्ष की प्राप्ति। मोक्ष की अवस्था में मनुष्य अपनी सीमाओं के बन्धन से मुक्त हो जाता है तथा दुःख के अभाव की अवस्था को प्राप्त करता है।

दर्शन मोक्ष का आवश्यक साधन है। दर्शन सत्य असत्य नित्य अनित्य, शिव अशिव आदि का विवेचन कर मनुष्य को असत्य की

सत्य आनित्य से नित्य आशिव से शिव की ओर उन्मुक्त कर उसकी धार्मिक चेतना को जाग्रत और पुष्ट करता है। इसप्रकार दर्शन धर्म का साधन बनता है।

दर्शन और धर्म दोनों का विषय सम्पूर्ण विश्व है। दर्शन मनुष्य की अनुभूतियों की अर्थपूर्ण व्याख्या कर सम्पूर्ण विश्व के आधार भूत सिद्धान्तों की खोज करता है। धर्म भी आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा सम्पूर्ण विश्व की व्याख्या करने का प्रयास करता है।

धर्म और दर्शन दोनों मानवीय ज्ञान की योग्यता और यथार्थता पर विश्वास करते हैं।

धर्म और दर्शन दृश्य जगत तथा भौतिक मूल्यों से असंतुष्ट रहते हैं।

धर्म और दर्शन में मूल साम्य यह है कि दोनों चरमतत्व में विश्वास करते हैं। चरमसत्ता तथा मनुष्य के बीच संबंध स्थापित करना धर्म का कर्तव्य है।

दर्शन और धर्म दोनों के ही ईश्वर, ईश्वर का स्वरूप

ईश्वर का अस्तित्व, आत्मा की अमरता पुनर्जन्म आदि के सम्बन्ध में सामान्य विचार है किन्तु पूर्णरूपेण दोनों की समस्या एक नहीं है। जैसे - ज्ञान मीमांसा के प्रश्न से धर्म को कोई मतलब नहीं है। दर्शनशास्त्र प्रायः Scientific Method अपनाता है, जैसे - Deduction, Induction जबकि धर्म faith की चीज है।

दोनों ही परम सत्य की खोज करते हैं। धर्म आध्यात्म प्रधान होता है। वह प्रायः परम सत्य को ईश्वर का नाम देता है जबकि दर्शन में दार्शनिकों ने परम सत्य का अलग - अलग स्वरूप बतलाया है। किसी ने इसे भौतिक कहा है किसी ने आध्यात्मिक।

दर्शन परम सत्य की खोज बौद्धिक संतुष्टि के लिए करता है, जबकि धर्म आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए परमसत्य की खोज करता है। जहाँ दर्शन चिन्तन प्रधान है वहीं धर्म क्रिया प्रधान है।

02 SUNDAY

मानव उच्च जीवन व्यतीत करने के लिए धर्म की ओर बढ़ता है। इसीप्रकार दार्शनिक उच्च जीवन व्यतीत करने के लिए बनता है। इसप्रकार दर्शन और धर्म मनुष्य और

समाज को ऊँचा उठाने में मदद करते हैं। एक ही उद्देश्य होते हुए भी दोनों के तरीके में अन्तर है। मोक्ष प्राप्ति या सद्गुण युक्त जीवन व्यतीत करना धर्म का प्रमुख लक्ष्य है। जबकि दर्शन मुख्य रूप से सत्य से सम्बन्धित है। इसी कारण धर्म क्रिया-प्रधान बन जाता है। पूजा-पाठ आदि धार्मिक व्यक्ति का प्रमुख कार्य हो जाता है, जबकि दर्शन बुद्धि प्रधान ही रहता है।

इसप्रकार, दर्शन और धर्म दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दर्शन के लिए धर्म इसलिए लाभकारी है कि दर्शन जहाँ केवल विचारों तक सीमित है, वहाँ धर्म क्रियात्मक रूप से आध्यात्मिक मूल्यों को प्राप्त करना चाहता है। वस्तुत: धर्म-दर्शन को सार्थक बनाता है। हमारे देश में तो दर्शन और धर्म प्राय: साथ ही रहे हैं।

दर्शन और धर्म के बीच इसप्रकार का घनिष्ठ संबंध होने के कारण कभी भी हिन्दुस्तान में इनके बीच कोई विरोध या झगड़ा नहीं हुआ। न कभी दर्शन ने धर्म को निरर्थक कहकर बहिष्कृत किया है न कभी धर्म दर्शन का शासक बनकर उसकी स्वतंत्रता कुचलने पर उतारू हुआ है। भारत के समूचे इतिहास में धर्म के नाम पर (सुकरात) की तरह किसी दार्शनिक को

इत्या कभी नहीं हुई है। धर्म और दर्शन एक ही गंतव्य स्थान के यात्री होने के कारण दोनों एक दूसरे की सहायता करते चलते हैं।

किन्तु धर्म और दर्शन के सम्बन्ध का उपर्युक्त विवेचन 'चार्वाक' दर्शन के विषय में लागू नहीं होता। चार्वाक आध्यात्मिक मूल्यों को वास्तविक नहीं मानते हैं। अतः इनके अनुसार धर्म एक ढकोसला मात्र है। पुरोहितों की ठग विद्या है। इसलिए धर्म से अलग रहने में ही दर्शन का कल्याण है और इसके खोखलेपन को दिख लाकर लोगों को इससे बचाना दर्शन का कर्तव्य है।

किन्तु चार्वाक के इस मत की प्रधानता कभी नहीं हो सकी क्योंकि भारतीय परंपरा की मुख्य धारा आध्यात्मिक रही है। आध्यात्मिक दर्शनों के महासागर में चार्वाक की एकाकी सरिता लुप्त प्राय सी हो जाती है।

वस्तुतः धर्म और दर्शन का वास्तविक सम्बन्ध यह है कि दर्शन धर्म से स्वतन्त्र है और धर्म दर्शन के आलोच्य विषयों में से एक है। इन दोनों के परस्पर सहयोग से ही दोनों का विकास होता रहा है।

I am who I am today because of the choices I made yesterday.